पुरातन भारतीय लिपियाँ

प्रस्तोता : नवीन जोशी

भाषा, भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह अभिव्यक्ति मूर्त रूप में लेखन द्वारा निष्पन्न की जाती है। मूलतः इन भावों की अभिव्यक्ति के लिये वाक्यों अथवा शब्दों में आने वाली ध्वनियों को श्रृंखलाबद्ध रूप में उच्चरित किया जाता है। इन उच्चरित ध्वनियों को ही स्वर तथा व्यञ्जन वर्णों की सहायता से क्रमबद्ध तरीके से लिखना 'लेखन-कला' के अंतर्गत आता है। 'लिप्' धातु (लेपन करना) से 'लिपि' यह शब्द निष्पन्न होता है। कूर्चिका अथवा कलम के द्वारा रंग या मसी की सहायता से किसी भी पृष्ठ पर अक्षर अथवा वर्ण की आकृति बनाना 'अक्षर लिखना' कहलाता है। लेखन की यह प्रक्रिया अनादिकाल से अनवरत चली आ रही है।

इन स्वरों तथा व्यञ्जनों की व्यवस्थित श्रृंखला को मातृकापाठ (वर्णमाला) कहा जाता है। सभी भारतीय वर्णमालायें अत्यन्त तर्कपूर्ण तथा ध्वन्यात्मक क्रम में व्यवस्थित हैं। इस प्रदर्शनी में प्राचीन भारतीय लिपियों की वर्णमातृकाओं के विषय में सामान्य परिचयात्मक चित्रण किया गया है- जिनमें प्रमुख रूप से ब्राह्मी, शारदा, ग्रंथ, नन्दिनागरी, मैथिली, मोडी, तिगलारी, नेवारी, टाकरी लिपियाँ प्रदर्शित की गयी हैं। ये लिपियाँ भारत की प्रमुख आधारभूत लिपियाँ हैं, जिनसे आगे के कालखण्डों में अन्य विविध लिपियों का प्रादुर्भाव हुआ।

नाकरिष्यदिदं ब्रह्मा लिखितं चक्षुरुत्तमम् ।
तत्रेयमस्य लोकस्य नाभविष्यच्छुभा गतिः॥

लिपि

लिपि या लेखनप्रणाली का अर्थ किसी भाषा को लिखने का तरीका (ढंग) होता है।

ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, वही लिपि है।

लिपि परिवार - संसार में मुख्यतः तीन लिपि परिवार हैं :-

1. चित्रलिपि परिवार - चीनी, जापान एवं कोरिया में प्रयुक्त लिपियाँ।
2. ब्राह्मी लिपि परिवार - देवनागरी, दक्षिण एशिया एवं दक्षिण पूर्व एशिया में प्रयुक्त लिपियाँ।
3. फोनेशियन लिपि परिवार - यूरोप, मध्यएशिया एवं उत्तरी अफ्रीका में प्रयुक्त लिपियाँ।

ब्राह्मी लिपि – ब्राह्मी लिपि एक प्राचीन लिपि है, जिससे कई एशियाई लिपियों का विकास हुआ।

उत्पत्ति – कुछ विद्वान् ब्राह्मी लिपि को सिंधु लिपि (सरस्वती लिपि) से निकली मानते हैं।

ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यों ने शुरु किया था।

ऐतिहासिक स्त्रोत – मौर्य सम्राट् अशोक के बौद्ध उपदेश जो पालि प्राकृत भाषा में थे, जिनका उल्लेख अशोक के शिलालेखों में मिलता है, उनकी लिपि ब्राह्मी लिपि मानी गयी है। ब्राह्मी के विषय में यह कहा जाता है, कि चौथी से तीसरी सदी ई. पू. में इसका विकास मौर्यों ने किया था और यह इसका सबसे पुराना स्वरूप माना जाता है।

- भारत की सारी लिपियाँ (अरबी, फारसी को छोड़ कर) ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई हैं।
- इतना ही नहीं, सिंहली तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों की लिपियाँ भी ब्राह्मी लिपि से निकली मानी जाती हैं।
- इस लिपि को पहली बार 1937 में जेम्स प्रिंस ने पढ़ा था।
- ब्राह्मी लिपि बायें से दायें हाथ की तरफ लिखी जाती है।
- यह मात्रात्मक लिपि है । व्यंजनों पर मात्रा लगाकर लिखी जाती हैं ।

ब्राह्मी लिपी

''ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती'' (अमरकोश) ब्राह्मी लिपि, भारतीय एवं अन्य समीपस्थ देशों में सभी लिपियों की जननी है। इसका उद्भव ई. पूर्व. 350 से 500 ई. के मध्य माना जाता है, जैसा कि पिपरावा के स्तूप और बर्ली गाँव के शिलालेखों से स्पष्ट होता है। इसका प्रभाव मौर्यवंशी राजा अशोक के समय से गुप्त काल ईसा की चतुर्थी और पाँचवीं शताब्दी तक रहा। गुप्तकाल में इसे 'गुप्त लिपि' के नाम से भी जाना जाता था। प्राचीन ग्रंथ 'ललितविस्तर' में प्रदत्त 64 लिपियों में ब्राह्मी लिपि का नाम सर्वप्रथम लिखा गया है। 'पजवण्णा सूत्र' तथा 'समवायांग सूत्र' नामक जैन ग्रंथों में इसका नाम 'बंभी' लिपि भी प्राप्त होता है।